Skill India
कौशल भारत-कुशल भारत
सत्यमेव जयते
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF SKILL DEVELOPMENT
& ENTREPRENEURSHIP
N·S·D·C
National
Skill Development
Corporation
Transforming the skill landscape
ASCI
Agriculture Skill Council of India

प्रतिभागी पुस्तिका

क्षेत्र
कृषि एवं संबंधित

उप - क्षेत्र
पशुपालन

व्यवसाय
पशुधन स्वास्थ्य प्रबंधन

संदर्भ संख्या: AGR/Q4803, Version 1.0
NSQF Level 3

कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन

प्रकाशक:

भारतीय कृषि कौशल परिषद
6वीं मंजिल, जीएनजी भवन, प्लॉट नं. 10
सेक्टर–44, गुरुग्राम –122004, हरियाणा, भारत
ईमेलः info@asci-india.com
वेबसाइटः www.asci-india.com
फोन नं. 0124-4670029, 4814673, 4814659

सर्वाधिकार सुरक्षित
प्रथम संस्करण, अप्रैल 2019

मुद्रक:

महेंद्रा पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड
प्लॉट नं. ई–42/43/44, सेक्टर–7,
नोएडा – 201301, उत्तर प्रदेश, भारत
ईमेलः mis.mahendrapublication@gmail.com
वेबसाइटः www.mahendrapublication.org

कॉपीराइट © 2019
भारतीय कृषि कौशल परिषद
6वीं मंजिल, जीएनजी भवन, प्लॉट नं. 10
सेक्टर–44, गुरुग्राम –122004, हरियाणा, भारत
ईमेलः info@asci-india.com
वेबसाइटः www.asci-india.com
फोन नं. 0124-4670029, 4814673, 4814659

अस्वीकरण
इस किताब में दी गई जानकारी को भारतीय कृषि कौशल परिषद् के विश्वसनीय सूत्रों से प्राप्त किया गया है। भारतीय कृषि कौशल परिषद् इन सभी जानकारी की सटीकता, पूर्णता एवं पर्याप्तता की वारंटी नहीं लेता। इसमें दी गई जानकारी के बारे में, उसकी व्याख्याओं के लिए या त्रुटियों, चूक, या अपर्याप्तता के लिए भारतीय कृषि कौशल परिषद् कोई जिम्मेदारी नहीं होगी। किताब में मौजूद सभी कॉपीराइट सामग्रियों के मालिक को ढूंढ़ने के हर प्रयास किए गए हैं। किसी भी तरह की गलती एवं चूक की तरफ ध्यान लाने के लिए पुस्तक के भावी संस्करणों में प्रकाशक आपके आभारी होंगे। इस किताब में दी गई जानकारी पर निर्भर होने पर इससे होने वाले किसी भी नुक्सान के लिए भारतीय कृषि कौशल परिषद् से संबंधित कोई भी संस्था जिम्मेदार नहीं होगी। इस प्रकाशन में उपलब्ध सामग्री कॉपीराइट के अधिकार क्षेत्र में हैं। अतः इस पुस्तक के किसी भी हिस्से को भारतीय कृषि कौशल परिषद की स्वीकृति के बिना अखबार, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया या अन्य किसी भी माध्यम से दोबारा प्रस्तुत या इसका वितरण एवं संग्रहित नहीं किया जा सकता।

कौशल विकास से एक बेहतर भारत का निर्माण होगा। अगर हमें भारत को विकास की दिशा में आगे बढ़ाना है तो कौशल विकास हमारा मिशन होना चाहिए।

श्री नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री भारत

Skill India
कौशल भारत-कुशल भारत

ASCI
Agriculture Skill Council of India

N·S·D·C
National Skill Development Corporation
Transforming the skill landscape

Certificate

COMPLIANCE TO QUALIFICATION PACK- NATIONAL OCCUPATIONAL STANDARDS

is hereby issued by the

AGRICULTURE SKILL COUNCIL OF INDIA

for

SKILLING CONTENT: PARTICIPANT HANDBOOK

Complying to National Occupational Standards of
Job Role/ Qualification Pack: **'Artificial Insemination Technician'** QP No. **'AGR/Q4803, NSQF Level 3'**

Date of Issuance : June 14th, 2017

Valid Up to : June 14th, 2021

*Valid up to the next review date of the Qualification Pack or the 'Valid up to' date mentioned above (whichever is earlier)

S.S. [signature]

Authorised Signatory
(Agriculture Skill Council of India)

आभार–पूर्ति

हम उन सभी संस्थानों और लोगों को आभारी हैं जिन्होंने इस प्रतिभागी पुस्तिका को बनाने में हमारी मदद की है। हम उन सभी लोगों को भी धन्यवाद देना चाहेंगे जिन्होंने इसकी विषय–वस्तु की समीक्षा की और इसकी गुणवत्ता को बेहतर करने एवं इसके अध्यायों को स्पष्ट और सरल रूप से प्रस्तुत करने में अपने सुझाव दिए। यह पुस्तिका कौशल विकास के कार्यक्रम को सफल रूप से चलने में मदद करने के साथ ही हमारे विभिन्न हितधारकों, खासकर प्रशिक्षार्थियों, प्रशिक्षकों एवं निर्धारकों (आंकलन करने वालों) इत्यादि के लिए बेहद मददगार साबित होगी।

हम हमारे विषय वस्तु विशेषज्ञ डॉ. मितहुल इस्लाम बरबरुआ के आभारी हैं जिन्होंने इस प्रतिभागी पुस्तिका को तैयार करने में हमारी मदद की। हमें उम्मीद है की यह प्रकाशन क्यू पी/एन ओ एस द्वारा प्रशिक्षण हेतु निर्धारित मानकों के अनुरूप होगा. भविष्य में इनमें सुधार हेतु पाठकों, व्यवसाय विशेषज्ञों एवं हितधारकों द्वारा दिए गए सुझावों का हम स्वागत करते हैं।

इस पुस्तक के बारे में

यह पुस्तक गुणवत्ता पैक के आधार पर कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन **तैयार करने में सहायक** होगी। कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन को कृत्रिम गर्भाधान तंत्र के प्रतिष्ठापन, जाँच एवं काम में लाने की जिम्मेदारी के लिए **विस्तार से बताया गया है**। इन मानकों के अनुसार एक कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन को कार्यक्षेत्र में परिचालन संबंधी निर्णय लेने में सक्षम होना चाहिए। प्रशिक्षार्थी को काम के बारे में स्पष्ट समझ होनी चाहिए और उन्हें परिणामोन्मुख होना चाहिए। प्रशिक्षार्थी को कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन से संबंधित विभिन्न उपकरणों के इस्तेमाल के कौशल को प्रस्तुत करने के लिए सक्षम होना चाहिए। प्रशिक्षार्थी प्रशिक्षक मार्गदर्शन में निम्लिखित कौशल के बारे में अपनी जानकारी बढ़ा पाएंगेः

- **ज्ञान और समझः** परिचालन संबंधी पर्याप्त जानकारी और कार्य करने की प्रक्रिया की समझ
- **प्रदर्शन के मानदंडः** व्यक्तिगत प्रशिक्षण के माध्यम से जरूरी कौशल प्राप्त कर पाएंगे एवं विशिष्ट मान्य निर्देशों के अंतर्गत अपेक्षित कार्यों को पूरा कर पाएंगे।
- **व्यवसाय–संबंधी कौशलः** कार्यक्षेत्र में परिचालन संबंधी फैसले लेने की क्षमता।

इस पुस्तिका में कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन तंत्र के प्रतिष्ठापन, जाँच एवं फील्ड में काम में लाए जाने के बारे में संपूर्ण जानकारी मौजूद है। यह प्रतिभागी को विभिन्न उपकरणों के इस्तेमाल के कौशल एवं समस्या को शीघ्र सुलझाने हेतु निर्णय लेने की अपनी क्षमता को प्रदर्शित करने में सक्षम होने में सहायता करेगी।

उपयोग किये गए प्रतीक

सीखने के प्रमुख परिणाम

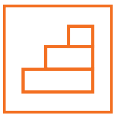
चरण

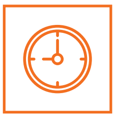
समय

टिप्स

टिप्पणियाँ

यूनिट का उद्देश्य

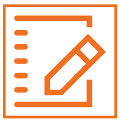
अभ्यास

सारांश

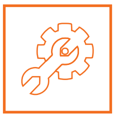
गतिविधि

विषय – सूची

क्र.सं.	मॉड्यूल और इकाइयां	पृष्ठ सं.
1.	**परिचय**	1
	इकाई 1.1 – आजीविका को समझना	3
	इकाई 1.2 – अपने गाँव को जानें	6
	इकाई 1.3 – कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन की भूमिका एवं महत्व	8
	इकाई 1.4 – निरंतर सीख एवं निर्देश हेतु सहायक तंत्र	10
2.	**पशु प्रजनन सेवाएं (AGR/N4820)**	13
	इकाई 2.1 – प्रजनन तंत्र को समझना	15
	इकाई 2.2 – पशुओं के अनुवांशिकी को समझना	20
	इकाई 2.3 – पशुओं की पहचान करना एवं रिकॉर्ड रखना	22
	इकाई 2.4 – बॉडी कंडीशन स्कोरिंग	26
	इकाई 2.5 – उत्तम नस्ल के पशुओं का चुनाव	29
	इकाई 2.6 – कृत्रिम गर्भाधान	30
	इकाई 2.7 – अनुर्वरता (बांझपन)	35
3.	**पशु चिकित्सा प्रसार सेवाओं में सहायक बनना (AGR/N4808)**	38
	इकाई 3.1 – अन्य प्रसार सेवाओं की समझ बनाना	40
	इकाई 3.2 – आवास के मूल सिद्धांत	45
	इकाई 3.3 – दुधारू पशुओं का चारा	48
	इकाई 3.4 – दुधारू पशुओं का चयन	57
	इकाई 3.5 – दूध देने वाले पशुओं के रोग या बीमारी से बचाव	59
	इकाई 3.6 – दूध दुहने एवं दूध का स्वस्थ प्रबंधन	63
	इकाई 3.7 – संचार उपकरणों का उपयोग करना	65
4.	**पशुधन क्षेत्र में विकास कार्य का क्रियान्वन एवं विपणन या (बाजार में लाना) (AGR/N4810)**	68
	इकाई 4.1 – सतत विकास एवं उससे जुड़े लक्ष्य	70
	इकाई 4.2 – विकास परियोजना प्रबंधन के मूलभूत तत्त्व	72
	इकाई 4.3 – व्यवसाय प्रबंधन	75
	इकाई 4.4 – विकास कार्यकर्ता से अपेक्षाएं	79
5.	**रोजगारपरकता और उद्यम कौशल**	82
	इकाई 5.1 – व्यक्तिगत शक्तियां एवं मूल्य श्रंखला	87
	इकाई 5.2 – डिजिटल साक्षरता : एक पुनरावर्ती	103
	इकाई 5.3 – धन संबंधी मामले	107
	इकाई 5.4 – रोजगार एवं स्वरोजगार के लिए तैयार होना	115
	इकाई 5.5 – उद्यमिता को समझना	125
	इकाई 5.6 – एक उद्यमी बनने के लिए तैयारी	147

Skill India
कौशल भारत - कुशल भारत

सत्यमेव जयते
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF SKILL DEVELOPMENT
& ENTREPRENEURSHIP

N·S·D·C
National
Skill Development
Corporation
Transforming the skill landscape

ASCI
Agriculture Skill Council of India

1.परिचय

इकाई 1.1 – आजीविका को समझना
इकाई 1.2 – अपने गाँव को जानें
इकाई 1.3 – कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन की भूमिका एवं महत्व
इकाई 1.4 – निरंतर सीख एवं निर्देश हेतु सहायक तंत्र

सीखने के प्रमुख परिणाम

इस मॉड्यूल के अंत में, आप निम्नलिखित में सक्षम होंगे:

1. आजीविका के अर्थ को परिभाषित कर पाएंगे एवं उसे दुग्ध उत्पादन एवं उससे जुड़े अन्य व्यवसायों से जोड़ पाएंगे।
2. अपने गाँव में मौजूद संस्थानों एवं संसाधनों के बारे में पता कर पाएंगे।
3. कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन की भूमिका एवं उनके महत्व को पहचान पाएंगे।
4. निरंतर सीखते रहने की प्रक्रिया के महत्व को समझ पाएंगे एवं निर्दिष्ट सहायक तंत्र की पहचान कर पाएंगे।

इकाई 1.1: आजीविका को समझना

इकाई के उद्देश्य

इस इकाई के अंत में, आप निम्नलिखित में सक्षम होंगे:

1. आजीविका के अर्थ को परिभाषित कर पाएंगे एवं उसे दुग्ध उत्पादन एवं उससे जुड़े अन्य व्यवसायों से जोड़ पाएंगे।

1.1.1 आजीविका को समझना

- आपकी आजीविका वो काम है जो आप धन कमाने के लिए करते हैं जिससे आपकी मदद हो।
- आसान भाषा में यह जीवन यापन के लिए धन कमाने का जरिया है।
- क्या आप ऊपर दिए गए चित्र में बने लोगों को देखकर उनकी आजीविका के बारे में बता सकते हैं?
- कोई अपनी या किसी और की आजीविका को कैसे बेहतर बना सकता है?

चित्र 1.1.1 आजीविका का एक साधन

तकनीकी भाषा में कहें तो आजीविका को क्षमता, संपत्ति एवं गतिविधियों के तौर पर परिभाषित किया जा सकता है जिन्हें लोग आय के लिए या धनार्जन के लिए इस्तेमाल करते हैं।

आप इसे 'आजीविका समीकरण' के रूप में याद रख सकते हैं।

आजीविका= क्षमता. संपत्ति. गतिविधियां

इसका अर्थ है की अपनी या अन्य लोगों की आजीविका को बेहतर करने के लिए किसी व्यक्ति को आमतौर पर इन बातों का ध्यान रखना होगा:

अ. क्षमता

ब. संपत्ति

स. गतिविधियां

क्षमता का अर्थ होता है किसी व्यक्ति के गुणों को पकड़ना या उसे मजबूत करना। क्षमताओं में शारीरिक, मानसिक क्षमताएं एवं गुण शामिल हैं। एवं व्यक्ति किसी काम को करने के लिए तभी सक्षम बनता है जब उसे सही माहौल मिले या सहायता मिले जैसे आर्थिक प्रबंध या वित्तीय पहुँच, बाजार तक पहुँच, सड़क से जुड़ाव इत्यादि।

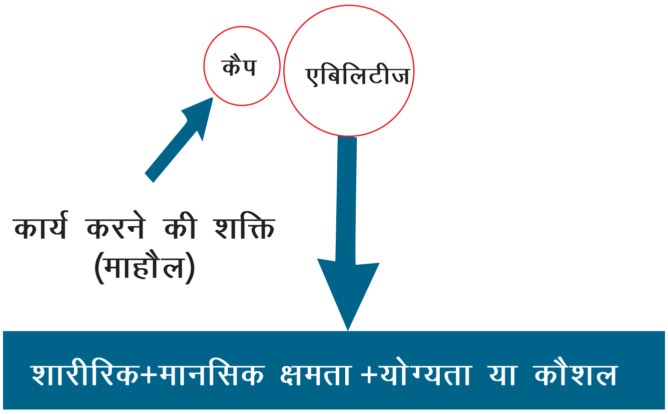

चित्र 1.1.2 क्षमता के विभिन्न हिस्सों को बारे में बता रहा है।
(ध्यान दें: कौशल, क्षमताओं का एक अभिन्न हिस्सा है)

टिप्स

क्या आप जानते हैं?

- भारत में ६ करोड़ (६० मिलियन) ग्रामीण घरों की आय दुग्ध उत्पादन के क्षेत्र पर निर्भर है। इनमें से दो –तिहाई हाशिये पर आने वाले भूमिहीन मजदूर हैं।
- भारत दुग्ध उत्पादन के क्षेत्र में विश्व का नेतृत्व करता है एवं 160.35 मिलियन टन दूध का उत्पादन करता है।
- बहुत सारे लोग दुग्ध उत्पादन के क्षेत्र में आयी साड़ी अन्य गतिविधियों से भी जुड़े हुए हैं जैसे बाजार तक पहुँचाना, वितरण, पशु चिकित्सा संबंधी सुविधाएं उपलब्ध कराना एवं दूध और उनसे संबंधित अन्य उत्पादों को इकट्ठा कर उन्हें बनाना।
- संपूर्ण विश्व में भारत भैंसों की आबादी में प्रथम एवं मवेशियों की आबादी में दूसरे स्थान पर आता है। 30 करोड़ भैंसों एवं मवेशियों की आबादी के साथ विश्व की 18% मवेशियों की आबादी भारत में मौजूद है। भारत में मवेशियों की कुल 39 प्रजातियां और भैंसों की 15 प्रजातियों की पहचान की गई है।

चित्र 1.1.3 दूर–दराज के ग्रामीण क्षेत्र का एक दुग्ध **बेचता** व्यापारी

चित्र 1.1.4 आसाम में दूध देने वाले पशुओं के लिए हरी घाँस–फूस या चारा **एकत्रित** हुआ एक व्यक्ति

नोट्स

इकाई 1.2: अपने गाँव को जानें

इकाई के उद्देश्य

इस इकाई के अंत में, आप निम्नलिखित में सक्षम होंगे:

1. अपने गाँव में उपलब्ध संस्थानों एवं संसाधनों के बारे में पता कर पाएंगे।

1.2.1 अपने गाँव के बारे में जानना

भारत के गाँवों में उसकी आत्मा बसती है। एक कृषि प्रधान देश होने के कारण भारत विकास के लिए अपने गावों पर निर्भर करता है। कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन केरूप में आप ज्यादातर गाँवों में ही दुग्ध उत्पादन करने वाले किसानों की मदद करेंगे। इसलिए आपके लिए अपने गाँव के बारे निम्न चीजें जानना आवश्यक है।

- गाँव में उपलब्ध संसाधन
- गाँव में मौजूद सामूहिक संस्थान एवं उनके क्रिया–कलाप
- गाँव का प्रशासन
- समाज एवं उसकी संरचना, धारणाएं एवं मानक
- गाँव की मुख्य आर्थिक गतिविधियां
- कृषि संबंधी आम परम्पराएं, फसल पंचांग या कैलेंडर एवं कृषि तंत्र
- त्योहार
- अन्य पशुओं की प्रजातियों की प्राथमिकताएं एवं खान–पान की खास आदतें
- मौसम एवं पर्यावरण संबंधी मुद्दे जिनका गाँव पर प्रभाव पड़ता है

कौन से विभिन्न प्रकार के साधन हैं?

गाँव में मौजूद संसाधनों को इस प्रकार बांटा जा सकता है:

- प्राकृतिक संसाधन जैसे जल, जमीन इत्यादि
- गाँव के लिए मानव निर्मित संसाधन या संपत्ति जैसे अस्पताल या जोड़ने वाली सड़क
- गाँव के लोगों की शारीरिक एवं मानसिक क्षमताएं
- गाँव में मौजूद लोगों के कौशल

नीचे दिए गए रेखा–चित्र का इस्तेमाल कर स्थानीय स्वशासन के काम करने के तरीकों के बारे में समझाएं। जैसे पंचायत या आपके क्षेत्र के ग्राम सभा के बारे में। पर्यावरण संबंधी मुख्य मुद्दों जैसे पानी की कमी, मौसम में परिवर्तन इत्यादि के बारे में चर्चा करें।

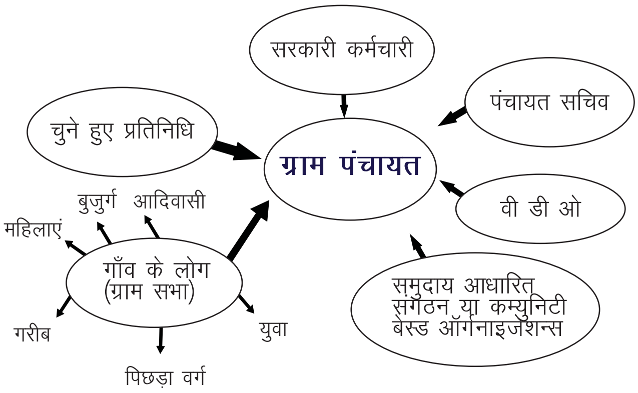

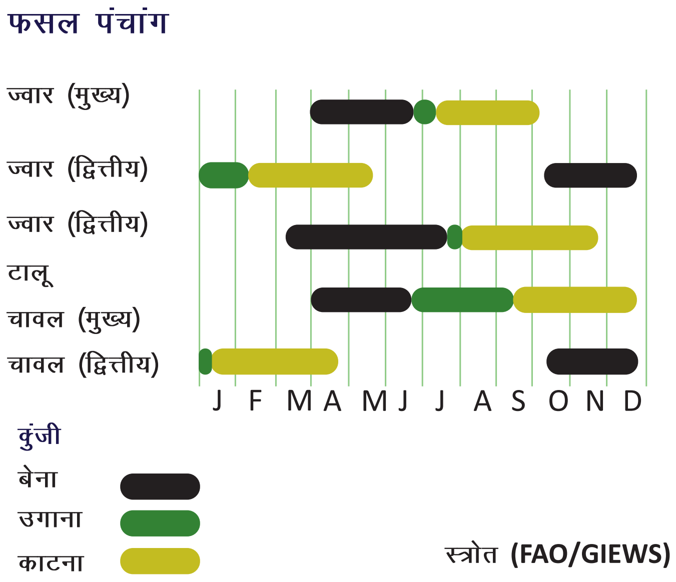

चित्र 1.2.1 फसल पंचांग

नोट्स

इकाई 1.3: कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन की भूमिका एवं महत्व

इकाई के उद्देश्य

इस इकाई के अंत में, आप निम्नलिखित में सक्षम होंगे:

1. एक कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन के रूप में अपनी भूमिका एवं जिम्मेदारियों को पहचान पाएंगे

1.3.1 कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन की भूमिका एवं महत्व

कृत्रिम गर्भाधान क्या है?

दुधारू पशुओं में प्रजनन की दो प्रक्रियाएं हैं (संसर्ग और पशुओं द्वारा पैदा किये गए उनके शावक या बच्चे) अर्थात प्राकृतिक रूप से प्रजनन या कृत्रिम बीजारोपण। आजकल कृत्रिम गर्भाधान प्रचलन में है। इस प्रक्रिया में श्रेष्ठ नर नस्ल के वीर्य को इकट्ठा कर उसे प्रयोगशाला में प्रसंस्करण कर वैज्ञानिक उपकरणों द्वारा मादा के प्रजनन अंग में प्रवेश कराया जाता है। इस तकनीक का इस्तेमाल जिस पशु पर किया जाता है उसके आनुवंशिक (जेनेटिक) सुधार के लिए यह एक अनोखा अवसर होता है। हम इसके बारे में और विस्तार से आगे के मॉड्यूल में जानेंगे। इस प्रशिक्षण के खत्म होने तक आप दुधारू पशुओं में कृत्रिम गर्भाधान करने के कौशल को प्राप्त कर पाएंगे।

हमें कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन की जरुरत क्यों है?

भारत में सरकारी पशु चिकित्सकों एवं पशु चिकित्सा पेशेवरों की कमी है जो किसानों के घर घर जाकर पशुओं की प्रजनन सुविधा उपलब्ध करा सकें। आंकड़ों के अनुसार भारत मेंकेवल 0.03652 प्रति किलोमीटर की दर के अनुसार सरकारी पशु चिकित्सक उपलब्ध हैं (साल 2012 के OIE एवं नीति आयोग के डाटा से गणना के मुताबिक)

इसके अतिरिक्त वर्ल्ड बैंक या अंतर्राष्ट्रीय बैंक के साल 2007–08 के आंकड़ों के मुताबिक भारत में 39 प्रतिशत ग्रामीण भारतीय सभी ऋतुओं में काम आने वाली सड़क से 2 किलोमीटर की दूरी बार (20 मिनट पैदल रास्ते के बराबर) रहते हैं। पशु चिकित्सा एवं प्रजनन संबंधी सुविधाएं जिला मुख्यालय या सरकारी अस्पतालों के माध्यम से उपलब्ध तो हैं मगर किसानों के घर तक इसकी पहुँच ना के बराबर है।

निजी क्षेत्रों में या सरकार के ठेके पर गाँव या समुदाय स्तर पर काम करने वाले कुशल कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन यह सुनिश्चित करने में मदद कर सकते हैं की दुधारू पशुओं के लिए प्रजनन की सुविधा किसानों के घर घर तक पहुंचे।

कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन एक दुग्ध उत्पादक किसान की आजीविका में मदद करता है

कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन दुधारू पशुओं की उत्पादन क्षमता को बढ़ाता है जो किसानों के लिए एक मुख्य संपत्ति है। वह किसानों के क्षमतावर्धन में भी सहायता करता है और साथ ही अन्य संस्थानों के साथ मिलकर काम कर यह सुनिश्चित करता है की दुग्ध उत्पादन की क्रिया व्यवहार में बानी रहे। वह ग्रामीण दुग्ध उत्पादक किसानों एवं पशु चिकित्सकों के बीच एक कड़ी के रूप में काम करता है और इस प्रकार सरकार को दुग्ध उत्पादन के विस्तार में मदद करता है।

एक कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन की क्या खास भूमिकाएं हैं?

वह दुधारू पशुओं के किसानों के लिए कृत्रिम गर्भाधान की सुविधा मुहैया कराता है (खासकर बड़े जानवरों के लिए)

दुग्ध उत्पादन कृषिकर्म के विस्तार में सहायता करता है: दुग्ध उत्पादन से जुड़ीं श्रेष्ठ कार्य प्रणाली एवं उपयुक्त तकनीक को बढ़ावा देकर जैसे: चराना, घर तैयार करना, प्रबंधन, प्रजनन इत्यादि।

विकास कार्यक्रमों जैसे किसानों की संस्थाओं को जोड़ने में, खेत के उत्पादों को बाजार तक पहुंचाने इत्यादि में सहायता करता है।

नोट्स

इकाई 1.4: निरंतर सीख एवं निर्देश हेतु सहायक तंत्र

इकाई के उद्देश्य

इस इकाई के अंत में, आप निम्नलिखित में सक्षम होंगे:

1. निरंतर सीखने के महत्व एवं पशु चिकित्सकों के मार्गदर्शन के महत्व को समझ पाएंगे।
2. सहायता हेतु संभावित संस्थानों की पहचान करने में सक्षम होंगे।

1.4.1 निरंतर सीख एवं निर्देश हेतु सहायक तंत्र

एक कुशल पेशेवर कार्यकर्ता के रूप में काम करते हुए आपको निरंतर नई जानकारी या नए ज्ञान की खोज करने की आवश्यकता है। पशु ज्ञान की दुनिया में रोजाना नै वैज्ञानिक खोज एवं तकनीकी सुधार होते रहते हैं। जो आपने आज सीखा है हो सकता है वह कल मेरे लिए पुराना हो जाए। मनुष्य एवं पशुओं के जीवन से जुड़ा हुए ऐसे क्षेत्र में निरंतर सीखने की आवश्यकता है।

एक कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन के तौर पर हो सकता है की आपके काम को पशु चिकित्सक निरीक्षण करें। जब आप अकेले काम कर रहे हैं और तब किसी समस्या का सामना कर रहे है इसे आप किसी भी नजदीकी अस्पताल में भेज सकते हैं। ऐसी सलाह दी जाती है की कृत्रिम गर्भाधान जिन पशुओं में किया गया है उनके गर्भधारण की जाँच के लिए आप किसान को पशु चिकित्सक के पास मार्गदर्शन के लिए भेजें।

कुछ संस्थागत सुविधाएं जहां आप पेशे से जुड़े रोजमर्रा की समस्याओं के बारे में तकनीकी हल प्राप्त कर सकते हैं एवं आधुनिक ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं:

- जिला या ब्लॉक स्तर पर उपलब्ध पशु चिकित्सा अस्पताल।
- पेशेवर पशु चिकित्सकों द्वारा संचालित स्थानीय कृषि–क्लिनिक।
- आपके जिले में मौजूद कृषि विज्ञान केंद्र (के वी के)।
- राज्य ग्रामीण विकास संस्थान के कोई भी केंद्र व शाखा।
- स्थानीय कृषि व पशु चिकित्सा विश्वविद्यालयों का विस्तृत केंद्र।
- गैर सरकारी संस्थानों की जानी–मानी सुविधाएं।

ऊपर बताए गए कई संस्थान विभिन्न विषयों पर पर्चियां, ब्रोशर या विवरण पुस्तिका इत्यादि प्रकाशित करते हैं। यह जानकारी का अच्छा माध्यम हो सकते हैं।

लिखित सरकारी सूचना–पत्र (नोटिस), दिशा–निर्देशों एवं रिपोर्टिंग प्रारूप या प्रतिवेदन प्रारूप इत्यादि से स्वयं को अवगत रखें।

वेबसाइट से जानकारी इकट्ठा करना अच्छी बात है मगर आपको यह सलाह दी जाती है की हमेशा इसके सूत्रों की विश्वसनीयता की जाँच कर लें एवं पशु चिकित्सकों से इसके बारे में चर्चा अवश्य कर लें।

टिप्स

1. इस खंड से सीख बेहद रोचक हो सकती है अगर आप नीचे दिए गए सवालों के उत्तर ढूंढने की कोशिश करें:
   - गाँव के बारे में जानकारी आपको लोगों की आजीविका को समर्थन देने में कैसे मदद कर सकती है? (आजीविका की तकनीकी परिभाषा एवं गाँव में उपलब्ध संसाधनों के बारे में देखें)
   - फसल पंचांग एवं गाँव के त्योहारों के बारे में जानकारी आपको कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन के रूप में काम करने में किस प्रकार मदद कर सकती है?
   - आजीविका को समर्थन देने के लिए कौशल विकास क्यों आवश्यक है? (क्षमता एवं आजीविका के समीकरण को देखें)
   - एक दुग्ध उत्पादक किसान की आजीविका को समर्थन देने के लिए मैं क्या कर सकता हूँ? (आजीविका समीकरण को देखें)
2. गाँव स्तर की विभिन्न संस्थानों द्वारा आयोजित सभाओं में हमेशा शामिल होने की कोशिश करें। आपकी राय गाँव वालों को दुग्ध उत्पादन क्षेत्र की परियोजनाओं को बेहतर ढंग से नियोजित एवं क्रियान्वित करने में मदद कर सकती हैं।
3. अपने समुदाय के दुग्ध उत्पादक किसानों को किसी भी कार्यक्रम के बारे में सुझाव देने से पहले हमेशा गाँव या सेवा क्षेत्र में उसकी 'जरुरत' एवं 'संसाधनों' तक अपनी पहुँच अवश्य बना लें।

अभ्यास

प्रश्न.1. आजीविका का समर्थन करने के लिए कौशल विकास क्यों महत्वपूर्ण है?

प्रश्न.2. पशुधन किसान की आजीविका का समर्थन करने के लिए आपको क्या करना चाहिए?

प्रश्न.3. बताएं कि कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन की आवश्यकता क्यों है।

प्रश्न.4. कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन की महत्वपूर्ण भूमिका और जिम्मेदारियों की सूची बनाएं।

प्रश्न.5. कैसे कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन डेयरी किसानों की आजीविका में सुधार करने में सहायक है। संक्षेप में बताएं।

नोट्स